नव भारत

| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

भारत में आतंकी नेटवर्क

गुजरात एटीएस ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि भारत की सुरक्षा एजेंसियों के सामने आतंकवादियों की कोई औकात नहीं. अल-कायदा इन इंडियन सबकॉन्टिनेंट से जुड़े चार कट्टरपंथी आतंकी गिरफ्तार हुए हैं, जिनकी साजिश थी भारत की लोकतांत्रिक नींव को उखाड़ फेंकना और 'शरिया कानून' थोपना. यह सिर्फ एक आतंकी मॉड्यूल नहीं था, बल्कि भारत के खिलाफ चल रही गजवा-ए-हिंद की साजिश का हिस्सा था.

दिल्ली, नोएडा और गुजरात में फैला यह नेटवर्क दिखाता है कि दुश्मन अब हमारी सीमाओं पर ही नहीं, बल्कि हमारे बीच छिपकर काम कर रहा है. उनके पास से बरामद भड़काऊ सामग्री, नकली भारतीय करेंसी, अल-कायदा से जुड़ा कंटेंट और मैप इस बात का सबूत है कि पाकिस्तान के इशारे पर यह गंदा खेल खेला जा रहा था. यही नहीं, इन आतंकियों ने सोशल मीडिया के जरिए भारत के युवाओं को गुमराह करने का षड्यंत्र रचा. यह मानसिक जहरीला जाल अब हमारे समाज के लिए सबसे बड़ा खतरा है.

इस सफलता का श्रेय गुजरात एटीएस की सतर्कता और साहस को जाता है. उन्होंने न केवल एक बड़े हमले को रोका, बल्कि यह संदेश भी दिया कि भारत में गजवा-ए-हिंद का ख्वाब देखने वालों को सिर्फ जेल या कब्र मिलेगी. देश को गर्व है कि हमारी सुरक्षा एजेंसियां हर मोर्चे पर दुश्मनों के मंसूबे नाकाम कर रही हैं. इसी क्रम में, इंदौर में भी प्रतिबंधित आतंकी संगठन बब्बर खालसा इंटरनेशनल से जुड़े एक आतंकवादी को गिरफ्तार किया गया है. उसका नाम आकाशदीप सिंह उर्फ 'बाज़' है. उसे दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने इंदौर के हीरानगर थाना क्षेत्र में एक निर्माण स्थल से गिरफ्तार किया, जहां वह क्रेन ऑपरेटर के रूप में अपनी पहचान छिपाकर काम कर रहा था. आकाशदीप सिंह पंजाब के बटाला के क़िला लाल सिंह थाने पर अप्रैल 2025 में हुए ग्रेनेड हमले में शामिल था. यह घटना इस बात की पुष्टि करती है कि आतंकी नेटवर्क देश के विभिन्न हिस्सों में सक्रिय हैं और उन्हें लगातार निष्क्रिय करना हमारी सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है. लेकिन यह सिर्फ शुरुआत है. अब वक्त आ गया है कि ऐसे आतंकी नेटवर्क की जड़ों को पूरी तरह खत्म किया जाए. पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद को लेकर और कड़े कदम उठाने होंगे. जो लोग भारत में रहकर हमारे संविधान, हमारे लोकतंत्र और हमारी संस्कृति को चुनौती देने की हिम्मत करते हैं, उनके खिलाफ बगैर किसी नरमी के कठोरतम दंड होना चाहिए. साथ ही, सोशल मीडिया पर चल रहे कट्टरपंथी एजेंडे को कुचलने के लिए एक व्यापक राष्ट्रीय नीति बने.

भारत एक लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम अपनी सहिष्णुता को हमारी कमजोरी बना दें. जो ताकतें हमारे खिलाफ साजिश करेंगी, उन्हें यह जान लेना चाहिए—भारत की धरती पर जिहाद नहीं चलेगा. यहां केवल संविधान चलेगा, और जो संविधान को चुनौती देगा, वह खत्म कर दिया जाएगा. इस संबंध में केंद्र सरकार की भी प्रशंसा करनी होगी कि उसने आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति अपना रखी है. पिछले 11 वर्षों के दौरान यदि कश्मीर के दो-तीन जिलों को छोड़ दिया जाए तो कहीं भी आतंकवाद की घटनाएं नहीं हुई हैं. कुल मिलाकर सुरक्षा एजेंसियों को निरंतर चौकस रहने की जरूरत है.

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष का मसला कहां उलझा!

श्याम यादव

> भाजपा का राष्ट्रीय अध्यक्ष कौन होगा, इस सवाल का जवाब नहीं मिल रहा। ये तात्कालिक मसला नहीं है, बल्कि डेढ़ साल से उलझा है। वर्तमान अध्यक्ष का कार्यकाल समाप्त हुए लंबा समय हो गया। उन्हीं के कार्यकाल को आगे बढ़ाया जा रहा है। लेकिन, अब ऐसे हालात नहीं है कि इसे टाला जाए, फिर भी मामला खींचता जा रहा है। ऐसे में यह आशंका प्रबल होती जा रही है, कि क्या भाजपा और संघ की आपसी खींचतान इसका कारण तो नहीं!

लोकसभा चुनाव के वक्त और उसके नतीजों के बाद जहां भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयं संघ में जो दूरी दिख रही थी, लग रहा है कि अब वह दूरी और ज्यादा बढ़ गई.शायद इसीलिए भारतीय जनता पार्टी के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष की नियुक्ति में हो रही है. अब कहा जाने लगा है कि सत्ता और पार्टी के वैचारिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में इसे लेकर मतभेद है. भाजपा और संघ के बीच एक नाम पर सहमति बनाने की कोशिश जारी है. अब जबकि देश के आधे से ज्यादा राज्यों में भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्षों कि नियुक्ति की जा चुकी है, ?से में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर किसी भी नाम क़ी घोषणा नहीं होने को लेकर शंका उठाना लाजमी है.

इस पद पर सहमति नहीं बन पर रही है और यह असहमति कहीं भाजपा और आरएसएस के बीच की दूरी तो नहीं! वैसे भी देखा जाय तो राज्यों के अध्यक्ष के चुनाव में जितने भी नाम सामने आए, उनमें संघ की सहमति रही है या ये सभी संघ से जुड़े रहें है. 'चाल चरित्र और चेहरे' के नारे के साथ पार्टी विथ डिफरेंस का नारा लेकर चलने वाली भारतीय जनता पार्टी अब पहले वाली पार्टी नहीं रह गई हैद्य पिछले 11वर्षों में भाजपा भी कांग्रेस की तरह हाईकमान वाले रास्ते पर चलती दिखाई दे रही है. यह हम हाल में हुए राज्यों के चुनावों में प्रत्याशियों के चयन में देख चुके है.

केवल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह द्वारा ही 6 राज्यों के अध्यक्षों का चयन किया गया. राज्यों से नामों की सूची मंगवाने की महज खानापूर्ति की गई. इसके अलावा सारे विधानसभा चुनाव भी मोदी के चेहरे और नाम पर लड़े गए. ऐसे में दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी कही जाने वाली भाजपा नेपथ्य में चली गई. राज्यों के अध्यक्ष चुनने की प्रक्रिया में भी यही किया गया, जिसे सभी ने देखा भी और समझा भी. लेकिन, अब जबकि राष्ट्रीय अध्यक्ष के चयन की बारी आई तो भाजपा और उसका हाईकमान अध्यक्ष पद पर किसी का नाम तय नहीं कर पा रहा है. क्या अध्यक्ष पद को ले कर सत्ता और संगठन में कोई असहमति है या भाजपा का ये हाईकमान संघ को दरकिनार कर रहा है. कुछ तो है, जो सामान्य नहीं है.

इस साल विजयादशमी पर आरएसएस की स्थापना के सौ वर्ष पूरे होने पर कोई आयोजन का न किया जाना और आरएसएस की ओर से 75 वर्ष की आयु में राजनीति छोड़ने की सलाह देना भी कहीं न कहीं इस ओर भी दर्शाता है कि सत्ता और संगठन में सब कुछ ठीक नहीं है. यही सब कुछ ठीक नहीं होने का कारण है कि नए अध्यक्ष पर सहमति नहीं बन पा रही है. ऐसे है कयास लगाए जा रहें है. हालांकि, अभी तक इस मुद्दे पर दोनों ओर से चुप्पी ही है. संकेत तो यह भी मिल रहे हैं कि भाजपा के इस हाईकमान के निर्णयों से संघ से जुड़े कई वरिष्ठ नेताओं को दरकिनार किए जाने से भी पार्टी के भीतर ही भीतर असंतोष है. लेकिन, संघ से अनुशाषित ये नेता अभी तक खामोश हैं.

वैसे भी अभी तक जितने भी राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने या बनाए गए (देखें सूची) सभी संघ के करीबी रहे हैं.

अब तक के पार्टी अध्यक्ष

- अटल बिहारी वाजपेयी 1980-1986
- लालकृष्ण आडवाणी 1986-1991 (भाजपा के तीन बार अध्यक्ष रहे)
- मुरली मनोहर जोशी 1991-1993
- लालकृष्ण आडवाणी (दूसरा कार्यकाल 1993-1998)
- कुशाभाऊ ठाकरे (1998-2000)
- बंगारू लक्ष्मण 2000-2001
- जना कृष्णमूर्ति 2001-2002
- वेंकैया नायडू 2002-2004
- लालकृष्ण आडवाणी (तीसरा कार्यकाल) 2004-2005
- राजनाथ सिंह 2005-2009
- नितिन गडकरी 2009-2013
- राजनाथ सिंह (2013-2014)
- अमित शाह 2014 से 2020
- जगत प्रकाश नड्डा जनवरी 2020 से अभी तक वह लंबे समय तक भाजपा के कार्यवाहक अध्यक्ष रहे.

बहरहाल जो भी हो इतना तो लग है रहा है कि भाजपा का नया अध्यक्ष कौन होगा इस पर पेंच फंसा है और सत्ता और संगठन में जेपी नड्डा के बाद अब कौन संभालेगा पार्टी की बाग़डोर इस पर असमंजस ही है. अध्यक्ष पद पर जिसे भी चुना जाय उसके सामने इस वर्ष के अंत में बिहार विधानसभा चुनाव और 2026 में पश्चिम बंगाल के चुनाव में पार्टी को जिताने की परीक्षा सामने होगी.

महाकौशल की डायरी

अंतर-कलह का शिकार हो गये सांसद के बैनर - पोस्टर..?

अविनाश दीक्षित

हाल ही नियुक्त हुए भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल का महाकौशल के सबसे बड़े जिले जबलपुर का प्रथम दौरा हुआ. उनके स्वागत में शहर में जमकर पोस्टर-बाजी की गई. भाजपा के तमाम नेता अपने आप को नए प्रदेश अध्यक्ष की फोटो के साथ पोस्टर-बैनरों में खास जतलाते हुए नजर आए. खंडेलवाल का स्वागत ऐतिहासिक बताया गया, लेकिन इससे ज्यादा चर्चा शहर में लगाए गए प्रदेश अध्यक्ष के साथ भाजपा सांसद आशीष दुबे के बैनर किसी अज्ञात तत्व द्वारा फाड़ने को लेकर हुई. जिस पर कांग्रेस के पूर्व नगर अध्यक्ष दिनेश यादव का बयान सामने आया कि ये भाजपा की अंतर-कलह का नतीजा है कि खुद पार्टी के किसी नेता द्वारा सांसद आशीष दुबे का बैनर फाड़ा गया है. क्योंकि इन दिनों भाजपा के नेताओं में इस बात की होड़ लगी है कि वे सभी अपने आप को नये भाजपा प्रदेश नेतृत्व के सामने सबसे लोकप्रिय कैसे दिखाएं.

यादव की माने तो उनका कहना है कि अगर प्रदेश अध्यक्ष, सांसद का बैनर पोस्टर कोई और फाड़ता तो सत्तारूढ़ दल सबसे पहले इसकी शिकायत करता और फिर पुलिस फोर्स लगाकर मामले में जमकर हंगामा किया जाता लेकिन इस बार ऐसा कुछ नहीं हुआ, जिससे साफ है कि भाजपा की अंतर-कलह के कारण की पार्टी के ही किसी कार्यकर्ता ने ये पोस्टर फाड़ा होगा.

कांग्रेस का कटाक्ष

कांग्रेस के पूर्व नगर अध्यक्ष दिनेश यादव ने ये भी कहा कि अगर जनता में से किसी ने ये कृत्य किया है तो वह भी एक शुभ संकेत माना जाना चाहिए क्योंकि भाजपा के नेतृत्व में बढ़ती मंहगाई, बेरोजगारी के खिलाफ जनता अब एकजुट होती जा रही है और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष के आगमन के पहले ही बैनर-पोस्टर फाड़कर अपना आक्रोश व्यक्त कर रही है. हालांकि यादव के इस कटाक्ष को भाजपाई दिया तले अंधेरा वाली कहावत बता रहे हैं.

छात्र राजनीति का अखाड़ा बना नर्सिंग कॉलेज

हमें राजनीति का हिस्सा नहीं बनना तो क्या कोई जबर्दस्ती है, ये चर्चाएं संभाग के सबसे बड़े मेडिकल कॉलेज अस्पताल के नर्सिंग कॉलेज के गलियारों में कुछ प्रोफेसर्स व नर्सिंग छात्राओं के खेमे में हुईं तो जिसने ये सुना वो दंग रह गया. हॉस्टल में छात्राएं रह रहीं वह मजबूरी में प्रिंसिपल के दवाब में एन एस यू आई की सदस्यता ग्रहण करने मजबूर हो गईं तो कुछ प्रोफेसर ने विरोध कर दिया.. बस फिर क्या था, मामला डीन तक पहुंचा लेकिन कार्रवाई कुछ नहीं हुई. कहा जाता है कि राजनैतिक दल में सदस्यता ज्वाइन करने कोई जबर्दस्ती नहीं होती और जिस भी छात्र-छात्राओं की उस राजनैतिक दल में जुड़ने इच्छा रहती है वह उसमें आपसी सहमति से जुड़ जाता है, लेकिन जुलाई के पहले सप्ताह मेडिकल के नर्सिंग कॉलेज की महिला प्रोफेसर ने प्रिंसिपल के कमरे के जो राज खोले उसने सभी को चौंका दिया. इसके बाद नर्सिंग कॉलेज में ये भी चर्चाएं थीं कि अब तो छात्राओं के साथ साथ प्रोफेसर्स को वो प्रिंसिपल स्टेला पीटर का कमरा, वह एन एस यू आई कार्यकर्ताओं के समूह का प्रतिनिधिमंडल उन्हें सपने में आने लगा है. इस घटनाक्रम ने मेडिकल के नर्सिंग कॉलेज प्रशासन को कटघरे में खड़ा कर दिया. मामला उछला तो प्रिंसिपल अपना बचाव करते नजर आई लेकिन मामले ने एक सिस्टम की धज्जियां उड़ा दीं कि राजनैतिक दल में सदस्यता लेने कोई संगठन प्रिंसिपल के साथ मिलकर कैसे जबर्दस्ती कर सदस्यता ग्रहण करवा रहा है. नर्सिंग कॉलेज परिसर में चर्चाएं ये भी हैं कि जिसने विरोध किया अब उसकी खैर नहीं. क्योंकि प्रिंसिपल अब विरोध करने वालों को छोड़ेगी नहीं, बस यही खतरा अब जबर्दस्ती संगठन की सदस्यता ग्रहण नहीं लेने वालों के सिर पर मंडरा रहा है. उधर इस गुंडागर्दी की खबर एबीवीपी को लगी तो दोनों संगठन आमने-सामने खड़े हो गये. हालात हाथापाई तक के बन गए. फिलहाल यह मामला चिंगारी की तरह अंदर ही अंदर सुलग रहा है, लावा कब बाहर आएगा, यह देखना दिलचस्प रहेगा.

हिमाचल में अब भी जारी पांचाली प्रथा

महाभारत में द्रौपदी या पांचाली के पांचों पांडव पति थे. इसे तत्कालीन समाज व्यवस्था में कैसे मान्य किया गया? क्या द्रौपदी की प्रतिशोध भावना की वजह से ही महाभारत युद्ध हुआ? इस प्रश्नों में न जाते हुए कहना होगा कि हिमाचल प्रदेश की हट्टी जनजाति में आज भी बहुपति प्रथा (पोलीएंड्री) का जारी रहना बेहद आश्चर्यजनक है. वहां सुनीता चौहान नामक युवती ने 2 सगे भाइयों प्रदीप नेगी और कपिल नेगी से विवाह किया. कानूनी तौर पर हिंदू विवाह कानून 1955 में बहुपत्नी या बहुपति विवाह अवैध है लेकिन यह कानून सिर्फ हिंदू, बौद्ध, जैन व सिख समुदाय के विवाहों पर लागू होता है. इसके प्रावधान अनुसूचित जनजाति पर तब तक लागू नहीं होते जब तक केंद्र सरकार शासकीय राजपत्र द्वारा इसे अवैध घोषित नहीं करती. हट्टी जनजाति में यह अलिखित प्रथा सदियों से मौजूद है. बहुपति विवाह के इस रीतिरिवाज को वहां %जोड़ीदरन% नाम दिया गया है. इसका उद्देश्य परिवार में संपत्ति विभाजन को रोकना है. सगे भाइयों की एक ही पत्नी रहने से परिवार बंटता नहीं है और खेती के के टुकड़े नहीं होते. जो संतानें होती हैं उनके पिता सारे भाइयों को माना जाता है. अदालतें परंपरागत कानून (कस्टमरी लॉ) को संविधान में वर्णित मूलाधिकारों के खिलाफ मानती है. मूलाधिकार में स्वतंत्रता, समानता, गरिमा शामिल हैं. उदाहरण के तौर पर ट्रिपल तलाक की परंपरा को सुप्रीम कोर्ट ने अवैध करार दिया जबकि यह मुस्लिम पर्सनल लॉन (शरीयत) 1937 में शामिल थी. तीन तलाक को मनमाना और संविधान के अनुच्छेद 14 व 21 का उल्लंघन माना गया था. इसे समानता, गरिमा और जीवन के अधिकार के खिलाफ करार दिया गया था. सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि प्रथाएं या परंपराएं दीर्घ काल तक जारी नहीं रह सकतीं. दूसरों के अधिकार छीनने के लिये रूढ़ियों की आड़ नहीं ली जा सकती. पुरुष वंशजों को वरीयता देकर महिला वंशजों को उत्तराधिकार से वंचित करना संविधान के अनुच्छेद 14 का उल्लंघन बताया गया था. पिछले 6 वर्षों में हट्टी समुदाय में ऐसे 5 विवाह हुए हैं. जिनमें एक महिला की कई पतियों से शादी हुई. उत्तराखंड सरकार ने 2024 में समान नागरिक कानून (यूसीसी) लागू कर बहुविवाह (पोलीगैमी) को प्रतिबंधित किया है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

फिर झूमकर आया सावन यह महीना बड़ा मनभावन

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, सावन का महीना बड़ा सुहावन, मनभावन और पावन है. कितने ही आस्थावान लोग शिवमंदिर में दर्शन करने जाते हैं और सावन सोमवार का व्रत करते हैं. सावन में बारिश की झड़ी लग जाती है और प्रकृति में बहार नजर आती है. फिर भी कुछ लोगों पर सावन का असर नहीं होता. उनके बारे में कहा जाता है- ना सावन सूखे, ना भादों हरे! ये लोग हमेशा एक समान ही रहते हैं.

हमने कहा, खेती-किसानी और ग्रामीण जीवन का सावन से गहरा संबंध है. पहले महिलाएं सावन में झूला झूला करती थीं. आम या नीम के वृक्ष की मोटी डाल से गांव में झूला बांधा जाता था. सावन में नागपंचमी, राखी जैसे त्यौहार आते हैं. खेतों में बआई का काम चलता है. आपने फिल्मी गीत सुना होगा-बदरा छाए कि मेले लग गए हाय, आया सावन झूम के !

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, कोई भी महीना शांति से चुपचाप आ जाता है लेकिन यह सावन झूम कर क्यों आता है?

हमने कहा, सावन में एक नशा सा रहता है इसलिए वह झूमता है. हवा में हिलती वृक्षों की डालियां को देखो. बादल का गरजना, बिजली का चमकना, बारिश की बूंदें सावन का संकेत हैं. कहावत है कि सावन के अंधे को हरा-हरा सूझता है! महाकवि कालिदास ने पर्वत पर घुमड़ते काले बादलों को देखकर मेघदूत नामक महाकाव्य लिखा था जिसमें एक विरही यक्ष अपनी प्रेमिका को बादल के जरिए प्रेम संदेश भेजता है. उस जमाने में मोबाइल पर मैसेज भेजने या चैट करने की सुविधा नहीं थी.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, हमें फिल्म मिलन का सुनील दत्त और नूतन पर फिल्माया गया गीत याद आ रहा है- सावन का महीना, पवन करे शोर, जियरा रे झूमे ऐसे जैसे बन मा नाचे मोर! एक अन्य गीत था- तुम्हें गीतों में ढालूंगा सावन को आने दो.

हमने कहा,

सावन को आने के लिए किसी की परमिशन नहीं लगती. अषाढ़ का महीना खत्म होते ही सावन आ धमकता है और नायिका गाने लगती है- बरसें बंदिया सावन की, सावन की मनभावन की ! फिल्म अमर प्रेम का गीत आपको याद होगा-चिनगारी कोई भड़के तो सावन उसे बुझाए, सावन जो आग लगाए, उसे कौन बुझाए !

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11973

-डॉ. सागर खादीवाला

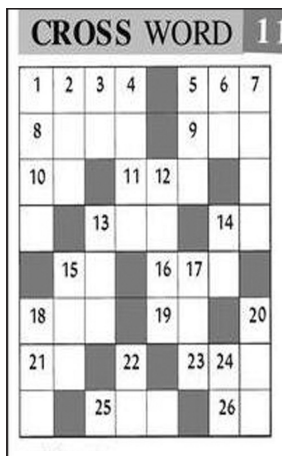

ऊपर से नीचे

1. प्राय:, बहुधा 2. वह कागज की पर्ची जिस पर रोगी के लिए औषधि और उसकी सेवन विधि लिखी होती है 3. किंतु, परंतु, पराया, पक्षी का पंख 4. निर्वाचन में प्रतिनिधि चुनने के लिए मत देने की क्रिया या भाव 5. भरण-पोषण करना, हिंडोला 6. स्वाद, फलों आदि का निचोड़ा हुआ अंश 7. अनादि काल, बहुत दिनों से चली आई परंपरा, शाश्वत 12. कोलाहल, गड़बड़ी 13. ज्ञान या बोध न होने का भाव 14. प्रवाह, दफा 15. गमन, चलना, एक स्थान से दूसरे स्थान को आने-जाने के साधन (कम्युनिकेशन) 17. मध्यस्थ 18. पीब, सामग्री (उर्दू) 20. निष्कपट, सीधा-सादा, सुगम 22. भूमि जोतने का उपकरण 24. सीमा, मर्यादा

बाएं से दाएं

1. अनूठा, उपमारहित, बेनजीर 5. एक कल्पित पत्थर जिसके लोहा छुआने से सोना बन जाता है 8. व्यायाम, बहुलता 9. चिपकाना, चपकना 10. साथी, सहयोगी, मित्र 11. तोप, बंदूक आदि का छोड़ना 13. आग, अग्नि 14. शालि जिसमें से चावल निकलता है 15. चेतना, होश, व्याकरण में वह विकारी शब्द जो किसी कल्पित या वास्तविक वस्तु का बोधक होता है 16. बादल, मेघ 18. मंच, चार लड्डों पर बांधकर बनाया गया ऊंचा स्थान 19. प्यारा या दुलारा लड़का 21. चोट, आघात, हमला 23. हिलोर, तरंग 25. असत्य, अशुध्द 26. समूह, लोगों का गुट, फूल की पंखुड़ी

Solution 11972

ब	रा	क	ओ	बा	मा	■	प
र	ज	त	■	ल	ल	का	र
ग	■	र	क्त	प	■	ना	च
द	ह	न	■	न	दी	■	म
■	ल	■	वि	■	क्षा	र	■
अं	ध	वि	श्वा	स	■	त	म
द	र	■	मि	न	मि	ना	ना
र	■	इ	त्र	■	त	रा	ना

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, यात्रा का योग है, व्यय में कमी होगी, व्यवसाय में सुधार होगा, वर्ष के मध्य में परिश्रम के उपरांत आंशिक सफलता प्राप्त होगी, शारीरिक कष्ट और मानसिक चिन्ता रहेगी, अत्याधिक व्यय होगा, वर्षके अन्त में राजनैतिक लाभ के योग हैं, व्यवसाय में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को परिश्रम के उपरांत लाभ होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को अत्याधिक परिश्रम करना पडेगा, पर लाभ कम होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक लाभ होगा,सिंह राशि के व्यक्तियों को सहयोगरहेगा, मकर और कुंभ राशि की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को अच्छे लाभ का योग है, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को सहयोग प्राप्त होगा.

मेष- अनुभवी लोगों का साथ लाभकारी रहेगा, प्रापर्टी संबंधी कार्य बनेंगे, राजकीय क्षेत्र में सफलता प्राप्त हागी, पारिवारिक मतभेदों से बचें. समय पर लाभ प्राप्त होगा.

वृषभ- निर्धारित कार्यक्रम में बदलाव से परेशानी होगी, साझेदारी से लाभ होगा, धार्मिक एवं आर्थिक कार्य बनेगा, मन में शांति और संतोष का अनुभव होगा.

मिथुन- अटकी तरक्की मिलने का योग है, खोई हुई प्रतिष्ठा हासल करने में सफ्ल होंगे, जमकर जायजाद के कार्यो में सफ्लता मिलेगी, निजी पुरूषार्थ बना रहेगा.

कर्क- रूकी योजनाओं पर खर्च की संभावना है, दौड़धूप करके निजी कार्य करवा लेंगे, व्यापार व्यवसाय को बढ़ाने का प्रयास करें, मांगलिक कार्यों पर विचार होगा.

सिंह- अधिकारियों के मेलजोल का लाभ मिलेगा, कारोबारी यात्रा सफ्ल रहेगी, किसी कार्य में परिश्रम अधिक करना होगा, मानसिक रूप से सुख और संतोष का अनुभव होगा.

कन्या- समय पर कार्य पूरा न होने पर निराशा होगी, भाग्य के भरोसे अवसर गवां देंगे, पारिवारिक मतभेद रहेगा, यथेष्ठ सावधानी रखकर कार्य करें, संयम रखें.

तुला- मित्र मण्डली के सहयोग से काम में आसानी होगी, अपनों का व्यवहार दुखी करेगा. वाहन चलाते समय यथेष्ठ सतर्कता वांछनीय. यश प्रतिष्ठा बनी रहेगी.

वृश्चिक- विवादित मामले आपकी पहल से हल हो सकते हैं, अनुभवी लोगों से लाभ होगा, साहस पराक्रम में वृद्धि होगी, मान सम्मान प्राप्त होगा,

धनु- व्यापारिक लेनदेन के पुराने मामले सुलझने से मन में संतोष रहेगा, कौटुम्बिक मामलों में सावधानी रखें, संतान की चिंता रह सकती हैं, कम लाभ में भी संतोष रहेगा.

मकर- भाग्योदय के अवसर मिलेंगे, सहयोगियों से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं, मन में संतोष रहेगा, परिश्रम की अधिकता रहेगी, मान सम्मान प्राप्त होगा.

कुम्भ- कार्यस्थल पर अपमान का भय है, तनाव की स्थिति में फैसला नहीं ले पायेंगे. राजकीय क्षेत्र में यश और प्रतिष्ठा बढ़ेगी. अच्छे अवसरों का लाभ मिलेगा.

मीन- जोखिम के कायों से दूर रहें, व्यापारिक साझेदारी लाभदायी हो सकती है, अतिथि रावणमन होगा, अनसोचे कार्यों में व्यस्तता रहेगी, झूठ आरोपों से बचें.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बालक सुंदर, सुशील, व्यक्तित्वान होगा, शरीर से कोमल तथा भावुक होगा, दूसरों को शीघ्र ही अपनी ओर आकर्षित करने में सफ्ल होगा. पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

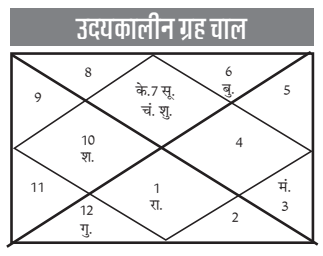

पंचांग

रा.मि. 03 संवत् 2082 श्रावण शुक्ल प्रतिपदा भृगुवासरे रात 11/38, पुष्य नक्षत्रे शाम 5/12, वज्र योगे दिन 9/23, किंस्तुघ्न करणे सू.उ. 5/21 सू.अ. 6/39, चन्द्रचार कर्क, शु.रा. 4, 6, 7, 10, 11, 2 अ.रा. 5, 8, 9, 12, 1, 3 शुभांक- 6, 8, 2.

व्यापार भविष्य

श्रावण शुक्ल प्रतिपदा को पुष्य नक्षत्र के प्रभाव से रूई, कपास, चांवल, चांदी, नमक सरसों अलसी लाख गेहूं, जौ, चना के भाव में वृद्धि होगी, गुड, खांड के भाव मे साधारण उठाव आयेगा. भाग्यांक 2612 है.

SUDOKU 7105

				6	8	5		
	1						2	
		2						8
			4					9
6				5				1
2					3			
5						3		
	8						6	
		4	9	1				

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7104

2	4	6	7	9	3	5	8	1
3	1	5	2	8	6	4	7	9
7	8	6	1	5	4	2	3	6
6	5	7	9	3	8	1	4	2
9	3	1	4	7	2	8	6	5
4	2	8	6	1	5	7	9	3
1	9	2	3	4	7	6	5	8
5	7	3	8	6	1	9	2	4
8	6	4	5	2	9	3	1	7